महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय

MAHARSHI PANINI SANSKRIT EVAM VEDIC VISHWAVIDYALAYA

देवास मार्ग, उज्जैन, मध्यप्रदेश — 456010

Email:- regpsvvmp@rediffmail.com, Website:- www.mpsvv.ac.in

./म.पा.सं.वि./शोध//25/2078 उज्जैन, दिनांक 17/06 /2025

// अधिसूचना //

विद्यावारिधि (पीएच.डी.) शोध प्रवेश परीक्षा - 2025-26

Vidyavaridhi (Ph.D.) Research Entrance Test (RET- 2025-26)

उपर्युक्त विषयानुसार लेख है कि महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन शोध अध्यादेश क्र. 09 तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा अधिसूचित एम्.फिल./पीएच.डी. उपाधि प्रदान करने हेतु न्यूनतम मानदंडऔर प्रक्रिया विनियम 2009, विनियम 2016, विनियम 2018 (प्रथम एवं द्वितीय संशोधन) एवं (पीएच.डी. उपाधि प्रदान करने हेतु न्यूनतम मानदण्ड औरप्रक्रिया) विनियम 07 नवम्बर 2022 के परिपालन में शैक्षणिक/अकादमिक सत्र 2025-26 के लिये अर्हताधारी अभ्यर्थियों से वेद, व्याकरण, ज्योतिष, संस्कृतसाहित्य, संस्कृत, योग एवं न्याय दर्शन तथा वेदान्त दर्शन विषयों में विद्यावारिधि (पीएच.डी.) उपाधि हेतु आयोजित होने वाली "शोध प्रवेश परीक्षा (**R.E.T.**) 2025-26"के लिए दिनांक 15.07.2025 तक विश्वविद्यालय की वेबसाइट के माध्यम से आनलाईन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।

आवेदन प्रक्रिया सम्बन्धी विस्तृत विवरण एवं सामान्य नियम निर्देश हेतु विश्वविद्यालय कि वेबसाइट **www.mpsvv.ac.in**के माध्यम से आनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जा सकते हैं। शोध प्रवेश परीक्षा सम्बन्धी विस्तृत विवरण सामान्य नियम एवं निर्देश अधोलिखितानुसार प्रसारित किये जा सकते हैं-

संलग्न :-

1. सामान्य नियम एवं निर्देश,
2. शोध प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम

(प्रो. दिलीप सोनी)
कुलसचिव

क्र./म.पा.सं.वि./शोध//25/2078A उज्जैन, दिनांक 17/06 /2025

प्रतिलिपि-

1. प्राचार्य, समस्त सम्बद्ध महाविद्यालय, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय,उज्जैन (म.प्र.) की ओर सूचनार्थ एवं महाविद्यालय सूचना पटल पर प्रदर्शित करने हेतु।
2. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) की ओर सूचनार्थ एवं संकाय/विभाग सूचना पटल पर प्रदर्शित करने हेतु।
3. समस्त सम्बद्ध महाविद्यालयों/संकायों/अध्यापन विभागों के शोध पर्यवेक्षक (शोध निर्देशक), महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की ओर सूचनार्थ।
4. कुलपति जी के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।
5. कुलसचिव कार्यालय, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।

(पृ. क्र.02 निरन्तर)

6. वित्त नियंत्रक/विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी (वित्त), महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
7. विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी (विद्या/अकादमिक), महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।
8. समन्वयक (प्रभारी) - परीक्षा/गोपनीय एवं शोध, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।
9. श्रीमान सम्पादक महोदय, दैनिक समाचार पत्र .... की ओर निशुल्क समाचार प्रकाशनार्थ सादर प्रेषित।
10. गार्ड फाइल एवं सम्बन्धित पत्रावली।

09.06.25

शोध प्रभारी
(विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी)

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय
MAHARSHI PANINI SANSKRIT EVAM VEDIC VISHWAVIDYALAYA
देवास मार्ग, उज्जैन, मध्यप्रदेश – 456010
Email:- regpsvvmp@rediffmail.com, Website:- www.mpsvv.ac.in

क्र./म.पा.सं.वि./शोध//25/ 2078 उज्जैन, दिनांक 17/06/2025

सामान्य नियम एवं निर्देश

1. **विश्वविद्यालय का परिचय-**

मध्यप्रदेश शासन द्वारा संस्कृत भाषा शास्त्र परम्परा एवं प्राचीन ज्ञान विज्ञान को संरक्षित करने तथा आधुनिक वैज्ञानिक विधि से अनुसन्धान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से "महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 के "अनुसार17 अगस्त 2008 को भगवान् महाकालेश्वर की पुण्य नगरी उज्जैन में महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय यूजीसी नैक द्वारा "ए" श्रेणी में प्रत्यायित है तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (**UGC**) की धारा 2 (**F**) के अन्तर्गत यह विश्वविद्यालय मान्यता प्राप्त है और भारतीय विश्वविद्यालय संघ (**AIU**) का भी सदस्य है। इस विश्वविद्यालय का कार्य क्षेत्र सम्पूर्ण मध्यप्रदेश है। विश्वविद्यालय से कुल 18 शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय सम्बद्ध हैं।

2. **विद्यावारिधि (पीएच.डी.) शोध उपाधि परिचय –**

विद्यावारिधि (पीएच.डी.) उपाधि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की अधिसूचना "डिग्रियों का विनिर्देशन – मार्च 2024" द्वारा " डॉक्टोरल" उपाधि के रूप में विनिर्देशित की गयी है। इसका उपाधि-पत्र संस्कृत भाषा एवं अंग्रेजी भाषा के अनुवाद सहित प्रदान किया जाएगा। यह उपाधि भारत के विधिमान्य विश्वविद्यालयों की पीएच.डी. उपाधि के समान है।विश्वविद्यालय की स्थापना के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध उपाधि का प्रबंध (**Thesis**) लेखन विश्वविद्यालय की सूचना क्र./म.पा.सं.वि./शोध/कु.स./23/2905, उज्जैन दिनांक 06.04.2023 अनुसार "जिन स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में संस्कृत माध्यम की अनिवार्यता नहीं है, ऐसे एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान/एम.ए. योग/एम.ए.सी. योग तथा एम.ए.वास्तु पाठ्यक्रमों से स्नातकोत्तर परीक्षा उतीर्ण शोधार्थी को अपना शोध प्रबन्ध हिन्दी भाषा में लिखने की अनुमति प्रदान की गयी है। किन्तु उन्हें अपने शोध प्रबन्ध का दस प्रतिशत भाग/ सारांश संस्कृत में लिखना अनिवार्य होगा। जो कि उपसंहार भाग में एक बिन्दु के रूप में सम्मिलित किया जाएगा।

1. **पीएच.डी. कार्यक्रम में प्रवेश के लिए पात्रता मानदण्ड –**

निम्नवत अभ्यर्थी पीएच.डी. कार्यक्रम में प्रवेश प्राप्त करने हेतु पात्र हैं-

3.1- वे अभ्यर्थी जिन्होंने पूरा कर लिया है-

(A)विज्ञापित सम्बद्ध विषय में 4 वर्षीय/8 सेमेस्टर स्नातक (शास्त्री/बी.ए. अथवा समकक्ष) उपाधि कार्यक्रम के बाद1वर्ष/2 सेमेस्टर स्नातकोत्तर (आचार्य/एम्.ए.) उपाधि कार्यक्रम अथवा 3 वर्षीय स्नातक (शास्त्री/बी.ए. अथवा समकक्ष)उपाधि कार्यक्रम के बाद 2 वर्षीय/4 सेमेस्टर स्नातकोत्तर (आचार्य/एम.ए.) उपाधि कार्यक्रम अथवा सम्बन्धित सांविधिकनिकाय द्वारा स्नातकोत्तर उपाधि के समकक्ष घोषित योग्यताएँ जहाँ कहीं भी ग्रडिंग प्रणाली का पालन किया जाता है,अथवा एक मूल्यांकन और प्रत्यापन एजेंसी द्वारा मान्यता प्राप्त ऐसे विदेशी शैक्षणिक संस्थान से समकक्ष योग्यता,

जो किसी प्राधिकरण द्वारा स्थापित, मान्यता प्राप्त या अधिकृत है, में कम से कम 55% अंकों के साथ या इसके समकक्ष ग्रेड में एक बिंदु पैमाने पर अथवा ऐसे प्रत्यायित विदेशी शैक्षिक संस्थान से समकक्ष उपाधि प्राप्त की हो, जो कि किसी आकलन एवं प्रत्यापन एजेंसी द्वारा प्रत्यायित है, जो कि शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता एवं मानकों को सुनिश्चित करनेएवं उनके आकलन, प्रत्यायन हेतु ऐसे किसी संविधिकप्राधिकरण द्वारा अथवा ऐसे एक प्राधिकरण के अन्तर्गत स्वीकृत एवं प्रत्यायित है जो कि उस देश में किसी कानून के अन्तर्गत स्थापित अथवा निगमित है।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति /अन्य पिछड़ा वर्ग (नॉन क्रीमी लेयर)/ दिव्यांग व्यक्ति, आर्थिक रूप से कमजोरवर्ग (ई.डब्लू.एस.) और अन्य श्रेणियों के अभ्यर्थियों को समय-समय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्णय केअनुसार 5% अंकों अथवा ग्रेड में समतुल्य छूट प्रदान की जा सकती है।

बशर्ते, 4 वर्षीय/8 सेमेस्टर स्नातक उपाधि कार्यक्रम के बाद प्रवेश पाने के इच्छुक उम्मीदवार के न्यूनतम 75% अंकहोने चाहिए या इसके समकक्ष ग्रेड एक पॉइंट स्केल में जहाँ भी ग्रडिंग सिस्टम का पालन किया जाता है अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग (नॉन क्रीमी लेयर) दिव्यांग व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ई.डब्ल्यू.एस.)और अन्य श्रेणियों के उम्मीदवार के लिए समय-समय पर आयोग के निर्णय के अनुसार 5 अंकों या ग्रेड में समतुल्य की छूट की अनुमति प्रदान की जा सकती है।

3.2- विज्ञापित सम्बद्ध विषय में एम.फिल. पाठ्यक्रम को कम से कम 55% अंकों के साथ उत्तीर्ण करने वाले अथवाजहाँ कहीं भी ग्रेडिंग प्रणाली अपनाई जाती है। वहाँ बिंदु मानक पर समतुल्य ग्रेड अथवा ऐसे प्रत्यायित विदेशीशैक्षिक संस्थान से समकक्ष उपाधि प्राप्त की हो, जो कि किसी आकलन एवं प्रत्यायन एजेंसीद्वाराप्रत्यायितहै, जो कि शैक्षिकसंस्थानों की गुणवत्ता एवं मानकों को सुनिश्चित करने एवं उनके आकलन प्रत्यायन हेतु ऐसे किसी सांविधिकप्राधिकरणद्वारा अथवा ऐसे एक प्राधिकरण के अंतर्गत स्वीकृत एवं प्रत्यायित है जो कि उस देश में किसी कानून केअंतर्गत स्थापितअथवा निगमित है, से समतुल्य योग्यता प्राप्त अभ्यर्थी पीएच.डी. कार्यक्रम में नामांकन के लिए पात्र होंगे।

4-कार्यक्रम की अवधि-

4.1-पीएच.डी. कार्यक्रम की अवधि कम से कम तीन (3) वर्ष की होगी, जिसमें पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कार्य (कोर्सवर्क)भी शामिल होगा तथा विद्यावारिधि (पीएच.डी.) कार्यक्रम में प्रवेश की तिथि से अधिकतम अवधि छह (6) वर्ष होगी।

4.2- विश्वविद्यालय के संविधि/अध्यादेश के अनुसार पुनः पंजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से अधिकतम दो (2) वर्षका अतिरिक्त समय दिया जा सकता है बशर्ते कि विद्यावारिधि (पीएच.डी.) कार्यक्रम पूरा करने की कुल अवधिविद्यावारिधि(पीएच.डी.) कार्यक्रम पूरा करने की कुल अवधि विद्यावारिधि (पीएच.डी.) कार्यक्रम में प्रवेश की तिथि सेआठ (8) वर्ष से अधिक नहीं होना चाहिए।बर्शते कि महिला विद्यावारिधि (पीएच.डी.) शोधार्थियों एवं दिव्यांग व्यक्तियों (40% से अधिक विकलांगता वाले) को दो (2) वर्षो की अतिरिक्त छूट कीअनुमति दी जा सकती है,तथापि विद्यावारिधि (पीएच.डी.) कार्यक्रम पूरा करने की कुल अवधि ऐसे मामले में विद्यावारिधि (पीएच.डी.) कार्यक्रम में प्रवेश की तारीख से दस (10) वर्ष से अधिक नहीं होना चाहिए।

4.3- महिलाविद्यावारिधि (पीएच.डी.) शोधार्थियों को विद्यावारिधि (पीएच.डी.) कार्यक्रम की पूरी अवधि में 240 दिनों के लिए अवकाश/शिशु देखभाल अवकाश प्रदान किया जा सकता है।

5- प्रवेश हेतु चयन प्रक्रिया-

5.1- विद्यावारिधि (पीएच.डी.) पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु लिखित प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी जिसे"शोध प्रवेश परीक्षा"(R.E.T)2025-26 कहा जाएगा।

5.2- प्रवेश, यूजीसी औरअन्य संबंधित वैधानिक/नियामक निकायों द्वारा जारी किये गए दिशा-निर्देशों/मानदण्डों को ध्यान रखते हुए और केंद्र/राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए आरक्षणनीति का पालन करते हुए संस्थान द्वाराअधिसूचित मानदण्डों पर आधारित होगा।

5.3-जिन छात्रों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पारम्परिक संस्कृत विषय (कोड-73) संस्कृत(कोड-25) एवं योग(कोड-100) विषय में यूजीसी नेट/JRF/स्लेट/गेट, यूजीसी-सीएसआईआर/सीईईडी और इसी तरहके राष्ट्रीय स्तर केपरीक्षाओं में अध्येतावृत्ति/ छात्रवृत्ति के लिए अर्हता प्राप्त करने वाले छात्रों को "शोध प्रवेशपरीक्षा" (R.E.T) से छूटप्रदान की जायेगी, परन्तु ऐसे अभ्यर्थियों को निर्धारित शुल्क के साथ निर्दिष्ट समयसीमा में आवेदन प्रस्तुत करना होगातथा उन्हें साक्षात्कार के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा।

5.4- उक्त बिन्दु क्र.5.3 में उल्लेखित यूजीसी नेट परीक्षा में नवीन आदेश क्र. NO.F-4-1 (UGC-NET Review Committee)2024 (NET)/1406-48 March 27, 2024/7 **चैत्र** 1946 दिनांक के द्वारा चयन में प्राथमिकता क्रम इस प्रकार होगा-

i. जे.आर.एफ. उत्तीर्ण

ii. नेट उत्तीर्ण

iii. पीएच.डी. प्रवेशार्थ अर्हता प्राप्त

5.5- बिंदु क्रमांक5.4 में उल्लिखित के अतिरिक्त अभ्यर्थियों के लिए "शोध प्रवेश परीक्षा"(R.E.T)2025-26 के माध्यम से प्रवेश दिया जाएगा। प्रवेश परीक्षा में 50% प्रश्न शोध पद्धति तथा 50% विशिष्ट (सम्बद्ध) विषय के पूछे जाएँगे।

5.6- प्रवेश परीक्षा में 50% अंक अर्जित करने वाले अभ्यर्थी साक्षात्कार के लिए बुलाए जाने के पात्र होंगे।

5.7-अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग/दिव्यांग वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ई.डब्ल्यू.एस.) औरअन्य श्रेणियों के उम्मीदवारों के लिए प्रवेश परीक्षा में 5% अंको की छूट की अनुमति दीजाएगी।

5.8- विद्यावारिधि (पीएच.डी.) उपाधि के लिए उपलब्ध सीटों की संख्या के आधार पर साक्षात्कार के लिए बुलाए जानेवाले छात्रों की संख्या निर्धारित की जाएगी।

5.9- विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा के आधार पर अभ्यर्थियों के चयन के लिए प्रवेश परीक्षा के लिए70% और साक्षात्कार/मौखिक परीक्षा में प्रदर्शन के लिए 30% कामहत्वदिया जाएगा।

5.10- "शोध प्रवेश परीक्षा"(R.E.T)2025-26 के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइटwww.mpsvv.ac.inके माध्यमसेऑनलाइन आवेदन करना होगा।

6- प्रवेश परीक्षा आवेदन शुल्क-

1. प्रवेशपरीक्षा शुल्क - रुपये 2500/- शब्दों में (दो हजार पाँच सौ रुपयेमात्र)
2. प्रवेश आवेदन शुल्क - रुपये 272/- शब्दों में (दो सौ बहत्तररुपये मात्र)

7. विद्यावारिधि हेतु उपलब्ध स्थान विवरण-

विद्यावारिधि(Ph.D) पंजीकरण हेतु सत्र 2025-26 के लिए उपलब्ध स्थानों का विवरण निम्नानुसार है-

क्र.	विषय	विभाग तथा संकाय	कुल स्थान	अनारक्षित	अ.पि.व.	अ.ज.जा.	अ.जा.	EWS
1	वेद	वेद विभाग/ वेद वेदांग तथा साहित्य संकाय	03	01	01	01	-	-
2	व्याकरण	व्याकरण विभाग/ वेद वेदांग तथा साहित्य संकाय	09	03	02	02	01	01
3	ज्योतिष	ज्योतिष विभाग/वेद वेदांग तथा साहित्य संकाय	04	02	01	01	-	-

	ज्योतिर्विज्ञान	ज्योतिर्विज्ञान/ विभागवेद वेदांग तथा साहित्य संकाय						
	वास्तु	वास्तु विभाग/ वेद वेदांग तथा साहित्य संकाय						
4	संस्कृत	विशिष्ट संस्कृत विभाग/ कला संकाय	11	03	03	02	02	01
	संस्कृतसाहित्य	संस्कृतसाहित्य विभाग वेद वेदांग तथा साहित्य संकाय						
5	योग	योग विभाग/ प्राचीन विज्ञान संकाय	03	01	01	01	-	-
	कुल		30	10	08	07	03	02

विशेष सूचना-

7.1- उक्त उपलब्धता स्थानों पर 50% प्रवेश बिन्दु क्र. 5.4 के अनुक्रम में जे.आर.एफ./ नेट / यू.जी.सी. पीएच.डी. अर्हता के अनुसार दिया जाएगा तथा शेष स्थान प्रवेश परीक्षा के माध्यम से भरें जाएँगे। बिन्दु क्र. 5.4 के अनुसार अभ्यर्थी उपलब्ध न होने पर प्रवेश परीक्षा के माध्यम से उत्तीर्ण अभ्यर्थियों से स्थान पूर्ण किए जाएँगे।

7.2 - उपर्युक्त अनारक्षित/अ.पि.व./अ.ज.जा./अ.जा./ EWS श्रेणी में अभ्यर्थी के उत्तीर्ण न होने पर रिक्त स्थान प्रावीण्य क्रम में भरे जाएँगे ।

7.3- अन्तिम परीक्षा परिणाम जारी होने की तिथि को विश्वविद्यालय में पीएच.डी. हेतु उपलब्ध रिक्त स्थानों में यदि वृद्धि होती है। तो तदनुसार अतिरिक्त अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा।

7.4 - 1. ज्योतिष विषय में सिद्धांत / फलित तथा ज्योतिष की अन्य विधाओं में आचार्य उपाधि प्राप्त छात्र आवेदन हेतु अर्ह हैं।
2. ज्योतिर्विज्ञान/ ज्योतिष में एम.ए. उपाधि प्राप्त छात्र ज्योतिर्विज्ञान विषय में आवेदन हेतु अर्ह हैं।
3. वास्तु विषय में एम.ए./आचार्य उपाधि प्राप्त छात्र वास्तु विषय में आवेदन हेतु अर्ह हैं। किन्तु वास्तु विषय में आचार्यउपाधि प्राप्त छात्र को अपना शोध प्रबन्ध संस्कृत भाषा में ही प्रस्तुत करना होगा।

7.5 - एम.ए.संस्कृत /एम.ए.संस्कृत प्राच्य विषय में उपाधि प्राप्त छात्र संस्कृत विषय में आवेदन हेतु अर्ह हैं।

7.6 - संस्कृत साहित्य में आचार्य उपाधि प्राप्त छात्र संस्कृत साहित्य विषय में आवेदन हेतु अर्ह हैं।

7.7 - उक्त विषयों से सम्बद्ध विषयों में तथा अन्तर्विषय शोध हेतु भी विद्यार्थी आवेदन हेतु अर्ह है।

7.8- उक्तानुसार विभाग तथा संकायों में शोधोपाधि प्रदान की जाएगी।

8. शोध पाठ्यक्रम शुल्क- (चयनित होने के उपरान्त देय शुल्क)-

1. पंजीयन शुल्क - 7500/- (सात हजार पाँच सौ रुपये मात्र)
2. सुरक्षितनिधि(शोध केन्द्र में देय) - 2500/- (दो हजार पाँच सौ रुपये मात्र)
3. प्रतिधारण/शिक्षण शुल्क(छमाही) - 6000/- (छह हजाररुपये मात्र)
4. पुस्तकालय शुल्क(प्रति छह माह) - 1500/- (एक हजार पाँच सौ रुपये मात्र)
5. कोर्सवर्क शुल्क - 15000/- (पन्द्रह हजार रुपये मात्र)
6. शोध प्रबन्ध प्रस्तुतीकरण शुल्क - 10000/- (दस हजार रुपये मात्र)

(अन्य प्रकार के विविध शुल्क विश्वविद्यालय के नियमानुसार समय-समय परदेय होंगे)।

09. छात्रवृत्ति-

विद्यावारिधि(Ph.D)पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त/पंजीयन होने के उपरान्त शोधार्थी अर्हता होने पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/मध्यप्रदेश शासन/केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली एवं छात्रवृत्तियों के लिए विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति प्रकोष्ठ के माध्यम से आवेदन कर सकेंगे।

10. परीक्षा केन्द्र-

प्रवेशपरीक्षा का आयोजन निर्धारित तिथि में विश्वविद्यालय मुख्यालय उज्जैन के परीक्षा केन्द्र में किया जाएगा।

11. विद्यावारिधि प्रवेश परीक्षा विवरण-

1. प्रवेश परीक्षा में निम्नानुसार दो प्रश्न होंगे-

प्रथम प्रश्नपत्र	-	शोध अभियोग्यता	—	50 X 2 = 100 अंक(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)
2. द्वितीय प्रश्नपत्र	-	विशिष्ट/ सम्बद्ध शास्त्र(खण्ड क)	—	25 X 2 = 50 अंक(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)
		विशिष्ट/ सम्बद्ध शास्त्र(खण्ड ख)	—	05 X 10 = 50 अंक(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)
परीक्षा की अवधि-		प्रथम प्रश्नपत्र	—	पूर्वाह्न 11: 00 — 12:30
		द्वितीय प्रश्नपत्र	—	अपराह्न 01:30— 04:00

- प्रथम प्रश्नपत्र में न्यूनतम 50 (पचास) प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी की ही द्वितीय प्रश्नपत्र की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन किया जायेगा।
- द्वितीयप्रश्नपत्र में भी 50 (पचास) प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है, इसकेपश्चात् वरीयताक्रम से अभ्यर्थी साक्षात्कार के लिए बुलाए जाने के पात्र होंगे।
- वरीयता क्रम से चयनित अभ्यर्थीको शोध रूचि/क्षेत्र पर मौखिक चर्चा/साक्षात्कार हेतु विभागीय शोध समिति (D.R.C.)के समक्ष उपस्थित होकर चयनित विषय पर अनिवार्य रूप से एक शोध प्रस्ताव बना कर लाना होगा तथा कम सेकम दस मिनिट का प्रस्तुतीकरणP.P.T.देना होगा।

विभागीय शोध समिति (D.R.C.)निम्नबिन्दुओं पर विचार करेगी-

- क्या अभ्यर्थी में प्रस्तावित शोध के लिए क्षमता है।
- क्या प्रस्तुत शोध कार्य सुलभता पूर्वक विश्वविद्यालय/शोध केन्द्र में संचालित किया जा सकता है।
- क्या प्रस्तावित शोध के क्षेत्र द्वारा नवीन/अतिरिक्त ज्ञान में योगदान प्राप्त हो सकता है।
- विभागीय शोध उपाधि समिति (D.R.C.) में प्रस्तुतीकरण के उपरान्त प्रस्तुत विषय पर शोध प्रारूप तैयार शोध उपाधि समिति (R.D.C.) से विषय स्वीकृत होने पर ही पंजीयन किया जा सकेगा।
- स्थान रिक्त नहीं होने की स्थिति में किसी भी प्रकार की प्रतीक्षा सूची जारी नहीं की जाएगी।

12. अत्यावश्यक सूचना —

1.निर्देशिकामें प्रवेश परीक्षा सम्बन्धी समस्त आवश्यक सूचनाएँ दी गई है अत: आवेदन करने से पूर्वसमस्त नियमों एवं निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

2.अभ्यर्थी द्वारा आवेदन पत्र में दी गई सूचनाओं का सत्यापन प्रवेश परीक्षा एवं प्रवेश के समय किया जाएगाकिसी भी प्रकार की सूचना प्रमाणित न होने पर अथवा अपुष्ट सूचना पाए जाने पर नियमानुसार विधिक कार्यवाही की जाएगी। ऐसी स्थिति में प्रवेश परीक्षा से वंचित/प्रवेश पंजीकरण निरस्त किया जा सकता है।

3.आवेदन पत्र पर अपनी नवीनतम दिनांक सहित स्पष्ट फोटो चस्पा करें। परीक्षा/प्रवेश के समय फोटो एवं हस्ताक्षर के मिलान नहीं होने की स्थिति मेंपरीक्षा से निष्कासन/प्रवेश निरस्तीकरण आदि कार्यवाही की जा सकती है।

13. अन्य आवश्यक निर्देश —

1. केवल अर्ह अभ्यर्थी ही लिखित प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। यदि कोई अभ्यर्थी निर्धारितयोग्यता के अभाव में इस प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है तो वह स्वयं व्यक्तिगत रूप से इसकेपरिणाम के लिए उत्तरदायीहोगा।

2. प्रवेश के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के कुलगुरु का निर्णय ही अन्तिम रूप से मान्य होगा।

3. न्यायिक विषयों में मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की इन्दौर खण्डपीठ का क्षेत्राधिकार होगा।

4. किसी भीस्थिति में उत्तर पुस्तिका का पुनः मूल्यांकन नही किया जाएगा।

5.प्रवेशपत्र के बिना परीक्षा कक्ष में प्रवेश नही दिया जाएगा।

15.परीक्षा सम्बन्धी निर्देश –

1. प्रवेश परीक्षा हेतु परीक्षार्थी नीला/काला बालपेन लेकर आएं ।
2. अनुचित साधन का प्रयोग करने अथवा परीक्षा कक्ष की मर्यादा/ अनुशासन भंग करने पर विधिक कार्यवाही की जाएगी।
3. परीक्षा भवन में मोबाइल फोन, केलकुलेटर स्मार्ट घड़ी एवं अन्य उपकरणों को लाना सर्वथा वर्जित है।
4. परीक्षा आरम्भ होने के 15 मिनिट बाद किसी भी स्थिति में परीक्षा कक्ष में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

16.प्रवेश परीक्षा सम्बन्धी तथा अन्य प्रमुख तिथियाँ –

ऑनलाइन आवेदन आरम्भ होने की तिथि	-	15.06.2025
ऑनलाइन आवेदन की अन्तिम तिथि	-	17.07.2025
प्रवेश पत्र डाउनलोड करने की तिथि	-	18.07.2025-21.07.25 तक
प्रवेश परीक्षा तिथि	-	30.07.2025
परीक्षा समय	-	प्रथम प्रश्नपत्र – पूर्वाह्न 11:00 - 12:30 द्वितीय प्रश्न पत्र – अपराह्न 01:30 – 04:00
परीक्षा स्थान	-	विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग, उज्जैन

शोध प्रस्ताव प्रस्तुतीकरण तथामौखिक परीक्षा के पश्चात परीक्षा फल घोषित किया जाएगा, तत्पश्चात् डी.आर.सी. तथा आर.डी.सी. का आयोजन किया जाएगा । -

(सूचना – अन्य समस्त नियम एवं निर्देश विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिसूचना नई दिल्ली, 07 नवम्बर 2022 (पीएच.डी. उपाधि प्रदान करने हेतु न्यूनतम मानदण्ड और प्रक्रिया) अधिनियम के अधीन मान्य होंगे

(प्रो.दिलीप सोनी)
कुलसचिव

क्र./म.पा.सं.वि./शोध /25/ **उज्जैन, दिनांक / /2025**

प्रतिलिपि-

1. प्राचार्य, समस्त सम्बद्ध महाविद्यालय, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) की ओर सूचनार्थ एवं महाविद्यालय सूचना पटल पर प्रदर्शित करने हेतु।
2. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) की ओर सूचनार्थ एवं संकाय/विभाग सूचना पटल पर प्रदर्शित करने हेतु।
3. समस्त सम्बद्ध महाविद्यालयों/संकायों/अध्यापन विभागों के शोध पर्यवेक्षक (शोध निर्देशक), महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की ओर सूचनार्थ।
4. कुलपति जी के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।
5. कुलसचिव कार्यालय, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।
6. वित्त नियंत्रक/विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी (वित्त), महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।

7. विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी (विद्या/अकादमिक), महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।
8. समन्वयक (प्रभारी) - परीक्षा/गोपनीय एवं शोध,महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।
9. गार्ड फाइल एवं सम्बन्धित पत्रावली।

नोट- प्रवेश परीक्षा सबंधित तिथि अथवा अन्य कोई परिवर्तन यथा समय विश्वविद्यालय की वेब साइड पर सूचित किया जाएगा। अन्य किसी सहयोग हेतु 9424071966 पर कार्यालयीन समय में सम्पर्क किया जा सकता है।

09.06.25

शोध प्रभारी
(विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी)

सत्र
2025 - 2026

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन

विद्यावारिधि (पीएच.डी.) शोध प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम

प्रश्नपत्र - प्रथम

शोध अभियोग्यता

समय :- 1.30 घंटा

पूर्णांक 100

नोट :- प्रत्येक इकाई से 10 प्रश्न, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। **(50x2 = 100)**

इकाई - 1 शिक्षण अभिवृत्ति :-

- शिक्षण : अवधारणाएं, उद्देश्य, शिक्षण का स्तर (स्मरण शक्ति, समझ और विचारात्मक), विशेषताएं और मूल अपेक्षाएं
- शिक्षार्थी की विशेषताएं : किशोर और वयस्क शिक्षार्थी की अपेक्षाएं (शैक्षिक, सामाजिक / भावनात्मक और संज्ञानात्मक, व्यक्तिगत भिन्नताएँ
- शिक्षण प्रभावक तत्त्व : शिक्षक, सहायक सामग्री, संस्थागत सुविधाएं, शैक्षिक वातावरण
- उच्च अधिगम संस्थाओं में शिक्षण की पद्धति : अध्यापक केंद्रित बनाम शिक्षार्थी केंद्रित पद्धति, ऑफ लाइन बनाम ऑन-लाइन पद्धतियां (स्वयं, स्वयंप्रभा, मूक्स इत्यादि)।
- शिक्षण सहायक प्रणाली : परंपरागत आधुनिक और आई सी टी आधारित।
- मूल्यांकन प्रणालियां : मूल्यांकन के तत्त्व और प्रकार, उच्च शिक्षा में विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली में मूल्यांकन, कंप्यूटर आधारित परीक्षा, मूल्यांकन पद्धतियों में नवाचार।

इकाई - 2 शोध अभिवृत्ति :-

- **शोधः अर्थ, प्रकार और विशेषताएं, शोध के उपागम**
- **शोध पद्धतियां : प्रयोगात्मक, विवरणात्मक, ऐतिहासिक, गुणात्मक एवं मात्रात्मक**
- **शोध के चरण :**
- **शोध प्रबन्ध एवं आलेख लेखन : फार्मेट और संदर्भ की शैली**
- **शोध में आई सी टी का अनुप्रयोग**
- **शोध नैतिकता**

इकाई - 3 संप्रेषण :-

- संप्रेषण : संप्रेषण का अर्थ, प्रकार और अभिलक्षण
- प्रभावी संप्रेषण : वाचिक एवं गैर-वाचिक, अन्तः सांस्कृतिक एवं सामूहिक संप्रेषण, संप्रेषण
- प्रभावी संप्रेषण की बाधाएँ
- जन- मीडिया एवं समाज

इकाई – 4 सूचना और संचार प्रौद्योगिकी :-

- आई सी टी: सामान्य संक्षिप्तियां और शब्दावली
- इन्टरनेट, इन्ट्रानेट, ई-मेल, श्रव्य-दृश्य कांफ्रेसिंग की मूलभूत बातें
- उच्च शिक्षा में डिजिटल पहलें
- आई सी टी और सुशासन

इकाई - 5 उच्च शिक्षा प्रणाली :-

- उच्च अधिगम संस्थाएं और प्राचीन भारत में शिक्षा
- स्वतंत्रता के बाद भारत में उच्च अधिगम और शोध का उद्भव
- भारत में प्राच्य, पारंपरिक और गैर-पारंपरिक अधिगम कार्यक्रम
- व्यावसायिक / तकनीकी और कौशल आधारित शिक्षा
- मूल्य शिक्षा और पर्यावरणपरक शिक्षा
- नीतियां, सुशासन, राजनीति और प्रशासन

शोध प्रभारी, विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी(अकादमिक), विभाग समन्वयक, कुलसचिव

शाध प्रवश पराक्षा पाठ्यक्रमः

विषयः- व्याकरणम्

(सम्बद्धविषये आचार्य / एम.ए. परीक्षामुत्तीर्णकानां कृते)

पूर्णाङ्काः- 100

एककः 1-

- पञ्चसन्धयः- संज्ञाप्रकरणम्, परिभाषाप्रकरणम्, अच्सन्धिः, हल्सन्धिः, प्रकृतिभावसन्धिः, अनुस्वारसन्धिः, स्वादिसन्धिः- (वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः)
- समासाः- केवलसमासः, अव्ययीभावसमासः, तत्पुरुषसमासः, बहुव्रीहिसमासः, द्वन्द्वसमासः।- (वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः)

एककः 2-

- कारकप्रकरणम्- प्रथमाविभक्त्यर्थविचारः, द्वितीयाविभक्त्यर्थविचारः, तृतीयाविभक्त्यर्थविचारः, चतुर्थीविभक्त्यर्थविचारः, पञ्चमीविभक्त्यर्थविचारः, सप्तमीविभक्त्यर्थविचारः, षष्ठीविभक्त्यर्थविचारः (सम्बन्धविचारः)- (वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः काशिकायाश्च)
- पूर्वकृदन्तप्रत्ययाः, उत्तरकृदन्तप्रत्ययाः, समासान्तप्रत्ययाः।(वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः)

एककः 3-

- तद्धितप्रकरणम्- एकशेषप्रकरणम्, सर्वसमासप्रकरणम्, समासान्तप्रकरणम्, अलुकसमासप्रकरणम्, समासाश्रयविधिप्रकरणम्, तद्धिताधिकारप्रकरणम्, अपत्याधिकारप्रकरणम्, रक्ताद्यर्थकाः, चातुरर्थिकाः, शैषिकप्रकरणम्, प्राग्दीव्यतीयप्रकरणम्, प्राग्धितीयप्रकरणम्, तद्धितेषु भावकर्मार्थाः, मत्वर्थीयप्रकरणम्, प्राग्दिशीयप्रकरणम्, स्वार्थिकप्रकरणम्, द्विरूक्तप्रकरणम्।(वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः)

एककः 4-

- परिचयः पाणिनि, कात्यायनः, पतञ्जलिः, भट्टोजिदीक्षितः, भर्तृहरिः, नागेशः, कौण्डभट्टः।
- व्याकरणशास्त्रीयसिद्धान्ताः- स्फोटः, वृत्तिः, शब्दार्थसम्बन्धः, शब्दशक्तिः, वैयाकरणनये शाब्दबोधः।

एककः 5-

- महाभाष्यस्य पस्पशाह्निकम्, वाक्यपदीयस्य ब्रह्मकाण्डम्, पाणिनिशिक्षा।
- आधुनिकयुगे व्याकरणशास्त्रोपयोगः, व्याकरणशास्त्रे भाव्यनुसन्धानचिन्तनञ्च।

निर्देशः-

1. प्रत्येकम् एककात् पञ्च प्रश्नाः बहुविकल्पात्मकाः प्रष्टव्याः भविष्यन्ति।
2. प्रत्येकम् एककात् द्वौ प्रश्नौ दीर्घोत्तरीयौ प्रष्टव्यौ भविष्यतः।
3. दीर्घोत्तरीयप्रश्नेषु केचन पञ्च एव समाधेयाः भविष्यन्ति।

क्रमाङ्कः	प्रश्नपत्रस्य नाम	प्रश्नस्वरूपम्	प्रश्नाः × अङ्काः	योगः
द्वितीयप्रश्नपत्रम्	विशिष्टशास्त्रम् (व्याकरणम्)	बहुविकल्पीयप्रश्नाः -	25 ×2= 50	100
		दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः-	5×10=50	

प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रमः

विषयः- दर्शनम्

(सम्बद्धविषये ,आचार्य / एम. ए. परीक्षामुत्तीर्णवतां कृते) पूर्णाङ्काः- 100

एककः 1

- न्यायवैशेषिकम् - प्रमाणविचारः, पदार्थविचारः, हेत्वाभासः, ईश्वरसिद्धिः(न्यायसिद्धान्तमुक्तावलिः, तर्कभाषा)
- साङ्ख्यम् - तत्त्वमीमांसा, सत्कार्यवादः, पुरुषप्रकृतिविचारः।

एककः 2

- योगः - अष्टाङ्गयोगः, चित्तभूमिः चित्तवृत्तयः, ईश्वरस्वरूपं समाधिः कैवल्यञ्च।
- मीमांसा - धर्मलक्षणम्, वेदविभागः, विधयः (अर्थसङ्ग्रहात्)।

एककः 3

- वेदान्तः – वेदान्तसम्प्रदायाः(अद्वैतवादः, विशिष्टाद्वैतवादः,द्वैताद्वैतवादः, शुद्धाद्वैतवादः, द्वैतवादः)
- पञ्चीकरणम्, अज्ञानस्वरूपम्, जीवजगत्मायाविचारः।

एककः 4

- श्रीमद्भगवद्गीता(सामान्यप्रश्नाः)
- परिचयः- अक्षपादः, कणादः, जैमिनिः, शङ्कराचार्यः, रामानुजाचार्यः, वल्लभाचार्यः, पतंजलिः, मध्वाचार्यः, कुमारिलभट्टः, प्रभाकरगुरुः।

एककः 5

- जैनदर्शनम्- स्याद्वादः, बौद्धदर्शनम्- द्वादशनिदानम्।
- आधुनिकयुगे दर्शनशास्त्रोपयो, दर्शनशास्त्रे भाव्यनुसन्धानचिन्तनञ्च।

निर्देशः-

1. प्रत्येकम् एककात् पञ्च प्रश्नाः बहुविकल्पात्मकाः प्रष्टव्याः भविष्यन्ति।
2. प्रत्येकम् एककात् द्वौ प्रश्नौ दीर्घोत्तरीयौ प्रष्टव्यौ भविष्यतः।
3. दीर्घोत्तरीयप्रश्नेषु केचन पञ्च एव समाधेयाः भविष्यन्ति।

क्रमाङ्कः	प्रश्नपत्रस्य नाम	प्रश्नस्वरूपम्	प्रश्नाः × अङ्काः	योगः
द्वितीयप्रश्नपत्रम्	विशिष्टशास्त्रम् (दर्शनम्)	बहुविकल्पीयप्रश्नाः -	25 ×2= 50	
		दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः-	5×10=50	100

शोध प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रमः

विषयः- ज्योतिषम्

(सम्बद्धविषये आचार्यपरीक्षामुत्तीर्णवतां / एम. ए. परीक्षामुत्तीर्णवतां छात्राणां कृते)

पूर्णाङ्काः- 100

एककः 1- ज्योतिषशास्त्रेतिहासः -

- उत्पत्तिः, क्रमिकविकासः, परिभाषा, भेदाः।
- ज्योतिषशब्दस्य व्युत्पत्तिः, ज्योतिषशास्त्रस्य महत्त्वं प्रासङ्गिकता च।
- वैदिकज्योतिषम्, पुराणेषु ज्योतिषम्, रामायणे महाभारते च ज्योतिषम्।

एककः 2- प्रमुखज्योतिर्विदः ग्रन्थाश्च-

- भारतीयज्योतिषस्य गणितपरम्परा वेधपरम्परा च।
- संहिताज्योतिषस्य प्राचीनता(वास्तु, प्रश्नः, शकुनम्, मुहूर्तम्)
- ज्योतिषशास्त्रस्य प्रवर्तकाचार्याः प्रमुखग्रन्थाश्च।

एककः 3- ज्योतिषस्य प्रमुखसिद्धान्ताः ज्योतिर्गणितञ्च-

- पञ्चाङ्गपरिचयः(तिथिः, वासरः, नक्षत्रम्, योगः, करणम्)।
- ग्रहपरिचयः, राशिपरिचयः, नवविधकालमानानि।
- गणितज्योतिषम्- ग्रहचालनम्, इष्टकालः, ग्रहस्पष्टीकरणम्, भयातभभोगसाधनविधिः, चन्द्रस्पष्टीकरणम्, अयनांशः, चरखण्डानयनम्, लङ्कोदयमानम्, स्वोदयमानम्, लग्नानयनम्, नतसाधनम्, दशमलग्नानयनम्।
- भावस्पष्टविधिः, षड्वर्गः, विंशोत्तरीदशाविचारः।

एककः 4- ज्योतिषशास्त्रे फलादेशविचारः-

- विविधयोगाः- राजयोगाः, अरिष्टयोगाः, अरिष्टभङ्गयोगाः, नाभसयोगाः, पञ्चमहापुरुषयोगाः, रोगयोगाः, अनफादियोगाः।
- द्वादशभावफलविचारः।

एककः 5- ज्योतिषशास्त्रे शोधपरम्परा सम्भावनाश्च।

- ज्योतिषशास्त्रे गणितं भौतिकी च।
- आधुनिकयुगे ज्योतिषशास्त्रोपयोगः। ज्योतिषशास्त्रे भाव्यनुसन्धानचिन्तनम्।

निर्देशः-

1. **प्रत्येकम् एककात् पञ्च प्रश्नाः बहुविकल्पात्मकाः प्रष्टव्याः भविष्यन्ति।**
2. **प्रत्येकम् एककात् द्वौ प्रश्नौ दीर्घोत्तरीयौ प्रष्टव्यौ भविष्यतः।**
3. **दीर्घोत्तरीयप्रश्नेषु केचन पञ्च एव समाधेयाः भविष्यन्ति।**

क्रमाङ्कः	प्रश्नपत्रस्य नाम	प्रश्नस्वरूपम्	प्रश्नाः × अङ्काः	योगः
द्वितीयप्रश्नपत्रम्	विशिष्टशास्त्रम् (ज्योतिषम्)	बहुविकल्पीयप्रश्नाः -	25 ×2= 50	
		दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः-	5×10=50	100

शोध प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रमः

विषयः- ज्योतिर्विज्ञान

(सम्बद्धविषये एम.ए. परीक्षामुत्तीर्णवतां छात्राणां कृते)

पूर्णाङ्काः- 100

इकाई 1- ज्योतिर्विज्ञान का इतिहास-

- उत्पत्ति, क्रमिकविकास, परिभाषा, भेद।
- ज्योतिष शब्द की व्युत्पत्ति, ज्योतिषशास्त्र का महत्व एवं प्रासङ्गिकता।
- वैदिक ज्योतिष, पुराणों में ज्योतिष, रामायण एवं महाभारत में ज्योतिष।

इकाई 2- प्रमुख ज्योतिर्विद तथा ग्रन्थ-

- भारतीय ज्योतिष की गणित एवं वेध परम्परा।
- संहिताज्योतिष की प्राचीनता(वास्तु, प्रश्न, शकुन, मुहूर्त)
- ज्योतिष के प्रवर्तक आचार्य एवं ग्रन्थ।

इकाई 3- ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्त एवं ज्योतिर्गणित-

- पञ्चाङ्गपरिचय(तिथि वार नक्षत्र,योग,करण)। ग्रहपरिचय, राशिपरिचय, नवविधकालमान।
- गणितज्योतिष- ग्रहचालन, इष्टकाल, ग्रहस्पष्टीकरण, भयातभभोगसाधनविधि, चन्द्रस्पष्टीकरण, अयनांश, चरखण्डानयन, लङ्कोदयमान, स्वोदय मान, लग्नानयन, नतसाधन, दशम लग्नानयन।
- भावस्पष्टविधि, षड्वर्ग एवं विंशोत्तरी दशा विचार।

इकाई 4- ज्योतिष एवं फलादेश-

- विविध योग- राजयोग, अरिष्ट तथा अरिष्टभङ्ग योग, नाभस योग, पञ्चमहापुरुष योग, रोगयोग, अनफादि योग।
- द्वादशभावफलविचार।

इकाई 5- ज्योतिष में शोधपरम्परा एवं सम्भावनाएँ

- ज्योतिष में गणित एवं भौतिकी।
- आधुनिक युग में ज्योतिष शास्त्र का उपयोग एवं भावी अनुसन्धान का चिन्तन।

निर्देशः-

1. प्रत्येक इकाई से पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जायेंगे
2. प्रत्येक इकाई से दो दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।
3. दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से पाँच प्रश्नों के उत्तर देय होंगे।

क्रमाङ्कः	प्रश्नपत्रस्य नाम	प्रश्नस्वरूपम्	प्रश्नाः × अङ्काः	योगः
द्वितीयप्रश्नपत्रम्	विशिष्टशास्त्रम् (ज्योतिर्विज्ञान)	बहुविकल्पीयप्रश्नाः -	25 ×2= 50	
		दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः-	5×10=50	100

शाध प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रमः

विषयः- ~~[illegible]~~ – संस्कृतम्

(सम्बद्धविषये एम॰ ए॰ परीक्षामुत्तीर्णवतां छात्राणां कृते)

पूर्णाङ्काः- 100

एककः 1-

- वैदिक साहित्यम्-

i. संहिता, ब्राह्मणानि, आरण्यकानि, उपनिषदः(परिचयात्मकप्रश्नाः)

एककः 2-

- भाषाविज्ञानं व्याकरणं च

i. भाषायाः स्वरूपम्, भाषा परिवाराः, ध्वनिविज्ञानम्, अर्थविज्ञानम्।

ii. सन्धयः, समासाः, कारकाणि (सामान्यप्रश्नाः)

एककः 3-

- भारतीयदर्शनम्

i. तर्कसंग्रहः, सांख्यकारिका, वेदान्तसारः, पातञ्जलयोगसूत्रस्य समाधिपादः(सामान्यप्रश्नाः)

एककः 4-

- नाट्यशास्त्रम्- (नाट्योत्पत्तिः, नाट्यप्रयोगः, रसाः, भावाः)
- दशरूपकम् (अभिनयाः, नायकभेदाः, नायिकाभेदाः, रूपकभेदाः।)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, उत्तररामचरितम्, मृच्छकटिकम्, मुद्राराक्षसम्, मालविकाग्निमित्रम्। (समीक्षात्मकप्रश्नाः)

एककः 5-

- रामायणम्, महाभारतम्, रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, मेघदूतम्, कादम्बरी,। (समीक्षात्मकप्रश्नाः)
- कविपरिचयः- कालिदासः, बाणभट्टः, भारविः, भवभूतिः, भासः, व्यासः, शूद्रकः, वाल्मीकि, जयदेवः। (परिचयः)

निर्देशः-

1. प्रत्येकम् एककात् पञ्च प्रश्नाः बहुविकल्पात्मकाः प्रष्टव्याः भविष्यन्ति।
2. प्रत्येकम् एककात् द्वौ प्रश्नौ दीर्घोत्तरीयौ प्रष्टव्यौ भविष्यतः।
3. दीर्घोत्तरीयप्रश्नेषु केचन पञ्च एव समाधेयाः भविष्यन्ति।

क्रमाङ्कः	प्रश्नपत्रस्य नाम	प्रश्नस्वरूपम्	प्रश्नाः × अङ्काः	योगः
द्वितीयप्रश्नपत्रम्	विशिष्टशास्त्रम् (संस्कृतम्)	बहुविकल्पीयप्रश्नाः -	25 ×2= 50	
		दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः-	5×10=50	100

10-6-23

शोध प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रमः

विषयः संस्कृतसाहित्यम्

(सम्बद्धविषये आचार्यपरीक्षामुत्तीर्णवतां छात्राणां कृते)

पूर्णाङ्काः- 100

एककः 1-

- काव्यशास्त्रसम्प्रदायाः, काव्यप्रकाशतः काव्यलक्षणानि, काव्यभेदाः, काव्यविधाः, काव्यगुणाः, शब्दशक्तिविमर्शः, रसाः, रीतयः, वृत्तयः। (सामान्यप्रश्नाः)
- अलङ्काराः- उपमा, रूपकम्, व्यतिरेकः, उत्प्रेक्षा, समासोक्तिः, काव्यलिङ्गम्, अर्थान्तरन्यासः, विभावना, दृष्टान्तः, वक्रोक्तिः, अनुप्रासः, यमकः, श्लेषः, निदर्शना।

एककः 2-

- छन्दांसि- मालिनी, स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडितम्, मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलकम्, शिखरिणी, भुजङ्गप्रयातम्।
- आचार्यपरिचयः- वामनः भामहः आनन्दवर्धनः, अभिनवगुप्तः, मम्मटः, विश्वनाथः, जगन्नाथः।

एककः 3-

- रामायणम्, महाभारतम्, रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, मेघदूतम्, कादम्बरी,। (समीक्षात्मकप्रश्नाः)
- कविपरिचयः- कालिदासः, बाणभट्टः, भारविः, भवभूतिः, भासः, व्यासः, शूद्रकः, वाल्मीकि, जयदेवः।

एककः 4-

- नाट्यशास्त्रम्- (नाट्योत्पत्तिः, नाट्यप्रयोगः, रसाः, भावाः),
- दशरूपकम् (अभिनयाः, नायकभेदाः, नायिकाभेदाः, रूपकभेदाः।)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, उत्तररामचरितम्, मृच्छकटिकम्, मुद्राराक्षसम्, मालविकाग्निमित्रम्। (समीक्षात्मकप्रशनाः)

एककः 5-

- ग्रन्थपरिचयः- ध्वन्यालोकः, काव्यप्रकाशः, वक्रोक्तिजीवितम्, दशरूपकम्, साहित्यदर्पणः, व्यक्तिविवेकः, रसगङ्गाधरः। (समीक्षात्मकप्रश्नाः)
- आधुनिकयुगे साहित्यशास्त्रोपयोगः।
- साहित्यशास्त्रे भाव्यनुसन्धानचिन्तनम्।

निर्देशाः-

1. प्रत्येकम् एककात् पञ्च प्रश्नाः बहुविकल्पात्मकाः प्रष्टव्याः भविष्यन्ति।
2. प्रत्येकम् एककात् द्वौ प्रश्नौ दीर्घोत्तरीयौ प्रष्टव्यौ भविष्यतः।
3. दीर्घोत्तरीयप्रश्नेषु केचन पञ्च एव समाधेयाः भविष्यन्ति।

क्रमाङ्कः	प्रश्नपत्रस्य नाम	प्रश्नस्वरूपम्	प्रश्नाः × अङ्काः	योगः
द्वितीयप्रश्नपत्रम्	विशिष्टपाठ्यक्रम (संस्कृत साहित्यम्)	बहुविकल्पीयप्रश्नाः -	25 ×2= 50	
		दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः-	5×10=50	100

शोध प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रमः

विषयः- वेदः

(सम्बद्धविषये आचार्य/एम. ए. परीक्षामुत्तीर्णवतां छात्रो.) पूर्णाङ्काः- 100

एककः 1- वेदपरिचयः

- ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अर्थववेदः
- वेदानां संहिता-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषदः

एककः 2- वेदकालनिर्णयः विशिष्टपरिचयश्च-

- प्राच्यानां मते वेदकालः, प्रतीच्यानां मते वेदकालः।
- वेदविभागः, वेदानाम् अपौरुषेयत्वम्।

एककः 3- वेदभाष्यकाराः-

- प्राच्याः –स्कन्दस्वामी, वेंकटमाधवः, उद्गीथ, महीधरः, सायणः, उव्वरः, मधुसूदन-ओझा।
- प्रतीच्याः- गेल्डनरः, लुडविगः, मेक्समूलरः, ग्रिफिथः, मैक्डानलः, विल्सनः, रॉथः।

एककः 4- वेदव्याख्यापद्धतिः-

- प्राच्यपद्धतिः, प्रतीच्यपद्धतिः।
- देवतानां स्थानानि, देवताप्रकारः, देवतापरिचयः।

एककः 5- वैदिक देवताः समाजश्च

- वैदिककालीना वेशभूषा, जीवनपद्धतिः, आवागमनसाधनानि।
- आधुनिकयुगे वेदस्य उपयोगः।
- वेदे भाव्यनुसन्धानचिन्तनम्।

निर्देशः-

1. प्रत्येकम् एककात् पञ्च प्रश्नाः बहुविकल्पात्मकाः प्रष्टव्याः भविष्यन्ति।
2. प्रत्येकम् एककात् द्वौ प्रश्नौ दीर्घोत्तरीयौ प्रष्टव्यौ भविष्यतः।
3. दीर्घोत्तरीयप्रश्नेषु केचन पञ्च एव समाधेयाः भविष्यन्ति।

क्रमाङ्कः	प्रश्नपत्रस्य नाम	प्रश्नस्वरूपम्	प्रश्नाः × अङ्काः	योगः
द्वितीयप्रश्नपत्रम्	विशिष्टशास्त्रम् (वेदः)	बहुविकल्पीयप्रश्नाः -	25 ×2= 50	
		दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः-	5×10=50	100

विषय- वास्तुशास्त्र

(सम्बद्धविषये एम. ए. परीक्षामुत्तीर्णवतां छात्राणां कृते)

पूर्णाङ्काः- 100

इकाई 1- वास्तुशास्त्र का इतिहास-

- उत्पत्ति, क्रमिकविकास, परिभाषा, भेद, उपभेद।
- वैदिक वास्तु(संहिता,ब्राह्मण,सूत्रग्रन्थ), पौराणिक वास्तु(रामायण, महाभारत अग्निपुराण मत्स्यपुराण आदि), संस्कृतवाङ्मय में वास्तु (अर्थशास्त्र, नाट्यशास्त्र, शुक्रनीति)

इकाई 2- प्रमुख वास्तुशास्त्री तथा ग्रन्थ-

- आचार्यपरिचय- विश्वकर्मा, मय, सूत्रधार, मण्डन, राजा भोज, टोडरमल।
- ग्रन्थपरिचय- विश्वकर्मप्रकाश, विश्वकर्मवास्तुशास्त्र, मयमतम्, समराङ्गणसूत्रधार, अपराजितपृच्छा, मानसार, राजवल्लभमण्डन, वास्तुमण्डनम्, प्रासादमण्डनम्, वास्तुसौख्यम्।

इकाई 3- प्रारम्भिक वास्तुशास्त्रीय नियम-

- वास्तुपुरुष(उत्पत्ति, लक्षण, भूमि)। भूमि-परीक्षण(भूमिचयन, वास्तु के प्रकार, आकार, प्लव)।
- गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश मुहूर्त विचार एवं विधि, गृहमेलापक विचार(काकिणी एवं अष्टवर्ग विचार), आयव्ययादि विचार,वृषवास्तुचक्र, लग्नशुद्धि, कलशशुद्धिचक्र।
- भू-शोधन एवं खनन- खनन-विधि, राहु स्थिति एवं राहुमुख विचार, शल्योद्धार।

इकाई 4- देवालय एवं ग्रामवस्तु-

- मन्दिर स्थापत्य शैलियाँ(नागर,द्रविड,बेसर)
- प्रतिमा विधान- प्रतिमा निर्माण तथा स्थापना के नियम, शिवलिङ्ग, विष्णुप्रतिमा आदि के लक्षण, जीर्णोद्धार विधि।
- ग्राम तथा नगर नियोजन।
- वास्तुविन्यास- एकाशीति(81) पदवास्तुमण्डल, चतुःषष्टि(64) वास्तुमण्डल, पदानुसार कक्षविन्यास, जलस्थान का निर्धारण, शुभ वृक्ष एवं वनस्पतियाँ।

इकाई 5- वास्तुशास्त्र में शोध परम्परा तथा सम्भावनाएँ-

- आधुनिक युग में वास्तुशास्त्र का उपयोग एवं वास्तुशास्त्र में भावी अनुसन्धान चिन्तन।
- वास्तु एवं अभियान्त्रिकी, स्थापत्य पुरातत्त्व

निर्देश-

1. प्रत्येक इकाई से पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जायेंगे
2. प्रत्येक इकाई से दो दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।
1. दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से पाँच ही प्रश्नों का उत्तर देय होगा।

क्रमाङ्कः	प्रश्नपत्रस्य नाम	प्रश्नस्वरूपम्	प्रश्नाः × अङ्काः	योगः
द्वितीयप्रश्नपत्रम्	विशिष्टशास्त्रम् (वास्तुशास्त्र)	बहुविकल्पीयप्रश्नाः -	25 ×2= 50	
		दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः -	5×10=50	100

विषय - योग योग

समय 2.30 घंटा

(सम्बद्धविषये एम.ए./एम.एस.सी./आचार्य परीक्षाकृतीर्णकर्ता हेतु) पूर्णांक 100

इकाई 1- योग के आधारभूत तत्त्व- इतिहास और विविध संप्रदाय। योग के ग्रन्थ - प्रमुख उपनिषद्, भगवद्गीता, योग वाशिष्ठ

- वेदों, उपनिषदों एवं प्रस्थानत्रयी का परिचय और पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा, षड्दर्शन की सामान्य अवधारणा- ज्ञानमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा तथा मुक्ति, सांख्य, योग और वेदान्त दर्शन विषेश सन्दर्भ में।
- महाकाव्य एवं स्मृतियों का परिचय रामायण (अरण्य कांड) महाभारत (शांतिपर्व) एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में योग ।
- महर्षि पतंजलि एवं गुरूगोरक्षनाथ की योग परंपराओं का संक्षिप्त परिचय एवं यौगिक अवदान ।
- नारद भक्तिसूत्र में योग तथा संतसाहित्य में योग- कबीरदास, तुलसीदास एवं सूरदास ।
- आधुनिक काल में योग : स्वामी विवेकानन्द, श्रीअरविन्द, महर्षि रमण व महर्षि दयानन्द सरस्वती की योग परम्पराएँ।
- समसामयिक काल में योगः- श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी, श्री टी. कृष्णमाचार्य, स्वामी शिवानन्द सरस्वती, स्वामीराम(हिमालय), महर्षि महेश योगी, पं श्रीराम शर्मा आचार्य का संक्षिप्त परिचय और योग के उत्थान और विकास के लिये इनका महत्त्वपूर्ण योगदान ।
- ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग, हठयोग एवं मंत्रयोग का परिचय ।
- जैनमत तथा बौद्धमत योग के तत्त्व ।
- प्रमुख दस उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय :-
- ईशावास्योपनिषद्- कर्मनिष्ठा की अवधारणा, विद्या और अविद्या की अवधारणा, ब्रह्म का ज्ञान आत्मभाव ।
- केन उपनिषद्- आत्म(स्व) और मन, सत्य की अनुभूति यक्ष के उपाख्यान की शिक्षा।
- कठ उपनिषद्- योग की परिभाषा, आत्मा का स्वरूप आत्मानुभूति का महत्त्व ।
- प्रश्नोपनिषद्- प्राण और रयि (सृष्टि) की अवधारणा, पंचप्राण, छहः मुख्य प्रश्न।
- मुण्डक उपनिषद्- ब्रह्मविद्या हेतु दो उपागम पराविद्या और अपराविद्या, ब्रह्मविद्या की महानता स्वार्थयुक्त कर्मों की निरर्थकता, तप और गुरुभक्ति, सृष्टि की उत्पत्ति, ध्यान का अंतिम लक्ष्य- ब्रह्मानुभूति।
- माण्डूक्य उपनिषद् - चेतना की चार अवस्थाएँ और ऊँकार (अ.ऊ.म) के सृजनित अक्षरों के साथ इनका सम्बन्ध।
- ऐतरेय उपनिषद्- आत्मा, ब्रह्माण्ड और ब्रह्म की अवधारणा ।
- तैत्तरीय उपनिषद्- पंचकोश की अवधारणा, शिक्षा वल्ली, आनन्द वल्ली, भृगुवल्ली का संक्षिप्त विवरण।
- छान्दोग्य उपनिषद्- ओम(उद्गीथ) ध्यान, शाण्डिल्यविद्या ।
- बृहदारण्यक उपनिषद् - आत्मा और ज्ञानयोग की अवधारणा, आत्मा और परमात्मा की एकात्मकता।

- भगवद्गीता- भगवद्गीता का सामान्य परिचय, योग की परिभाषाएं और इनकी प्रासंगिकता और क्षेत्र, भगवद्गीता के आवश्यक तत्व, आत्मस्वरूप स्थितप्रज्ञ एवं सांख्य योग का अर्थ (अध्याय) 2. कर्मयोग (अध्याय 3). संन्यास योग तथा कर्म स्वरूप (सकाम और निष्काम), संन्यास, ध्यान योग (अध्याय 6). भक्त के प्रकार (अध्याय 7) भक्ति का स्वरूप (अध्याय 12) भक्तियोग के साधन और साध्य, त्रिगुण और प्रकृति का स्वरूप, त्रिविध श्रद्धा, योग साधक का आहार, आहार का वर्गीकरण(अध्याय 14 व 17), दैवासुर सम्पद् विभाग योग(अध्याय 16), मोक्षसन्यास योग(अध्याय - 18)।
- योग वाशिष्ठ -- योग वाशिष्ठ के प्रमुख बिन्दु, आधि और व्याधि की अवधारणा, मनोदैहिक व्याधियाँ, मुक्ति के चार द्वारपाल, परमानन्द की उच्चतम अवस्था, योग के विघ्नों के निराकरण हेतु अभ्यास, सत्वगुण का विकास, ध्यान के आठ चरण, ज्ञान की सप्तभूमियाँ।

ईकाई 2 – योग के ग्रन्थ ii – योग उपनिषद्-

- श्वेताश्वतरोपनिषद् – द्वितीय अध्याय- ध्यानयोग की विधि और उसका महत्व, ध्यान के लिए उपयुक्त स्थान प्राणायाम का क्रम और उसकी महत्ता, योगसिद्धि के पूर्व लक्षण, योगसिद्धि का महत्त्व, तत्वज्ञ। छठा अध्याय परमेश्वर का स्वरूप और उसकी महिमा, भगवत प्राप्ति के उपाय, मोक्ष की प्राप्ति।
- योग कुण्डल्युपनिषद्- प्राणायम सिद्धि के उपाय, प्राणायाम के भेद ब्रह्म प्राप्ति के उपाय।
- योगचुडामण्युपनिषद्- योग के छः अंगो का वर्णन एवं प्रत्येक के फल और उनके क्रम।
- त्रिशिखिब्राह्मणोपनिषद्- अष्टाङ्गयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग का वर्णन।
- योग तत्वोपनिषद्- मन्त्रयोग, लययोग, हठयोग एवं राजयोग तथा इनकी अवस्थाएँ, आहार एवं दिनचर्या, योग सिद्धि के प्रारम्भिक लक्षण एवं सावधानियाँ।
- ध्यानबिन्दूपनिषद्- ध्यानयोग का महत्व, प्रणव का स्वरूप, प्रणव ध्यान की विधि, षडंगयोग, नादानुसन्धान द्वारा आत्मदर्शन।
- नादबिन्दूपनिशद्- हंस विद्या, उनके विभिन्न अंगोपांगो का वर्णन, ओमकार की 12 मात्राओं तथा उनके साथ प्राणों के विनियोग का फल, नाद के प्रकार तथा नादानुसंधान साधना का स्वरूप, मनोलय स्थिति।
- योगराजोपनिषद्- मन्त्रयोग, लययोग, हठयोग, राजयोग, नौ चक्र, उनमें ध्यान की प्रकिया एवं फलश्रुति।

इकाई- 3- पातंजल योग सूत्र-

- समाधि पाद, साधन पाद, विभुति पाद, कैवल्य पाद।

इकाई 4- हठयोग के ग्रन्थ-

- हठयोग और हठयोग के ग्रन्थों का परिचय- योगबीज, गोरक्ष संहिता, शिव संहिता, वशिष्ठ संहिता, सिद्धसिद्धांत पद्धति, हठप्रदीपिका, घेरण्डसंहिता और हठरत्नावली। हठयोग का उद्देश्य, हठयोग से सम्बन्धित भ्रामक धारणाएँ

- हठयोग की पूर्वापेक्षायें (दस यम और दस नियम), हठयोग में साधक और बाधक तत्त्व, घट की अवधारणा, हठयोग में शोधन क्रियाओं की अवधारणा और महत्त्व स्वास्थ्य एवं रोग में शोधन क्रियाओं का महत्त्व, मिताहार, हठयोग के साधकों द्वारा पालन किए जाने वाले नियम एवं विनियम।
- हठयोग के ग्रन्थों में आसन : योगासन की परिभाषा पूर्वापेक्षाएं और प्रमुख विशेषताएं हठप्रदीपिका, हठरत्नावली, शिवसहिता, घेरण्ड संहिता में वर्णित विभिन्न आसनों के लाभ, सावधानियां और प्रतिकूलात्मक निर्देश।
- हठयोग ग्रन्थों में प्राणायाम, प्राण एवं प्राणायाम की अवधारणा, प्राणायाम के चरण और अवस्थाएँ, हठयोग साधना में प्राणायाम की पूर्वापेक्षाएं हठप्रदीपिका, घेरण्ड संहिता व शिवसंहिता तथा गोरक्षसंहिता में वर्णित प्राणायाम, प्राणायाम के लाभ, सावधानियाँ एवं प्रतिकूलात्मक निर्देश।
- वन्ध, मुद्रा और अन्य अभ्यास:- मुद्रा एवं बन्ध की अवधारणा व परिभाषा हठप्रदीपिका, हठरत्नावली और घेरण्डसंहिता व शिवसंहिता, वशिष्टसहिंता में वर्णित बन्ध एवं मुद्रा की परिभाषा, लाभ, सावधानियां और निशेधात्मक निर्देश।
- घेरण्ड संहिता में प्रत्याहार और ध्यान की अवधारणा, परिभाषा, लाभ और विधियाँ, हठप्रदीपिका में नाद और नादानुसंधान की अवधारणा और लाभ नादानुसंधान की चार अवस्थाएँ (चरण) हठयोग और राजयोग में सम्बन्ध, हठयोग के उद्देश्य, हठयोग की समसामयिक उपादेयता।

इकाई 5- सम्बद्ध विज्ञान सामान्य मनोविज्ञान, मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान का परिचय, आहार एवं पोषण।

- निद्रा, व्यवहार का मनोवैज्ञानिक आधार, व्यक्तित्व का स्वरूप, प्रकार एवं निर्धारक तत्त्व।
- सामान्य मानसिक विकारों का परिचय। कोशिका, उतक, अंग, तंत्र का परिचय।
- पेशीयकंकाल तंत्र, पाचन एवं उत्सर्जन तंत्र, वृक्क की क्रियाविधि, तंत्रिका तंत्र, हृदयरक्तपरिवहन तंत्र।
- अंतःस्रावी तंत्र, श्वसनतंत्र, रोग प्रतिरक्षातंत्र एवं प्रजनन तंत्र, आहार एवं पोषण की मूलभूत अवधारणाएँ।
- घटक, पोषण की समझ एवं आवश्यकता। आहार के कार्य एवं उनका वर्गीकरण।
- खाद्यसमूह, अनाज एवं तृणधान्य, आहार एवं चयापचय, खनिज और लवण।

निर्देशः-

1. प्रत्येक इकाई से पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जायेंगे।
2. प्रत्येक इकाई से दो दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।
3. दीर्घोत्तरीय प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर देय होंगे।

क्रमाङ्क	प्रश्नपत्र का नाम	प्रश्नस्वरूप	प्रश्न × अङ्क	योग
द्वितीय प्रश्नपत्र	विशिष्टशास्त्र (योग)	बहुविकल्पीयप्रश्न - दीर्घोत्तरीयप्रश्न-	25 ×2= 50 5×10=50	100